DELHIIN/2007/20081 Date of Publication: 13/10/2019 G-3/DL(N)/202/2019-21

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष—13 अंक—5 अक्टूबर 2019 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

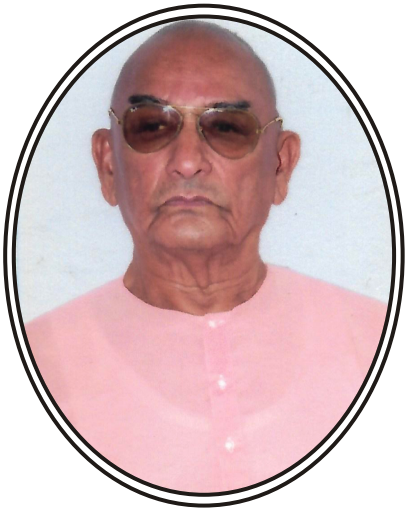

तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानंद जी

संस्थापकः

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल (रजि. सं. S/20762)

सत्संग भवन — सी०एस०/ओ०सी०एफ० नं० 6, ब्लॉक—जी, सैक्टर—11, रोहिणी, दिल्ली—85
मो० : 9810344596, 011—27574151
ई—मेलः atmagyanp@gmail.co,
वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.org

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

इस अंक में प्रकाशितः–

1. कामना एवं वासनाओं की पूर्ति के लिए किये गये कर्मों के संस्कार प्रलयकाल में भी नष्ट नहीं होते हैं।
2. साधना में सफलता सन्त के वचनों पर दृढ़ विश्वास करने पर ही मिल सकती है।
3. शिक्षा के द्वारा भौतिक ज्ञान एवं विद्या के द्वारा अध्यात्म की प्राप्ती होती है।
4. मानव जीवन में आन्तरिक साधना से ही सच्ची शान्ति स्थापित हो सकती है।
5. परमात्मा की सरकार का बोध कराने वाले सन्त आज भी उपलबध हैं।
6. अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग–1)

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः– चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.org है

सम्पादकीय

कामना एवं वासनाओं की पूर्ति के लिए किये गये कर्मों के संस्कार प्रलय काल में भी नष्ट नहीं होते।

इस संसार में सभी जीवों को उनके द्वारा किये गये कर्मों के अनुसार ही योनियाँ मिलती हैं। चौरासी लाख योनियों में मनुष्य योनि के अतिरिक्त सभी योनियाँ भोग योनियाँ हैं। परमात्मा की कृपा से जीव को बन्धन मुक्त होने के लिए कर्म प्रधान मनुष्य योनि मिलती है। इस योनि में वह ऐसे कर्म कर सकता है जिससे उसे आवागमन से छुटकारा मिल सके। ऐसे कौन से कर्म हैं जिन्हें करने से जीव बन्धन मुक्त हो सकता है। इसका ज्ञान सन्त शरण में आने पर ही होता है। क्योंकि इस संसार में जीव कामना एवं वासनाओं की पूर्ति के लिए सकाम कर्मों को ही जन्म जन्मान्तरों से करता आ रहा है। इन कर्म संस्कारों के बीज उसके चित्त में हमेशा पड़े रहते हैं। जो समय आने पर उसके अन्दर उग आते हैं, क्योंकि इन सकाम कर्मों के संस्कार प्रलय काल में भी नष्ट नहीं हो पाते हैं और ये संस्कार उसे हमेशा बन्धन में ही बांधे रखते हैं इस प्रकार जीव कर्म जेल में फंसा रहता है। उसे बन्धन मुक्त होने का कोई उपाय नहीं सूझता है। ये कर्म संस्कार जीव के अन्दर उसी प्रकार से उदय हो जाते हैं जिस प्रकार पृथ्वी में पड़ा हुआ बीज उचित वातावरण पा कर अंकुरित हो जाता है। जब तक जीव का सकामी जीवन निष्कामी नहीं बनता तब तक कर्मबन्धन से नहीं छुटा जा सकता है। जब तक मनुष्य जन्म में निष्काम कर्म का ज्ञान देने वाले सन्त नहीं मिले और यह शरीर छूट गया तो जीव कर्म बन्धन में ही बँधा रहेगा। जब मानव को इस कर्म प्रधान योनि में परमात्मा की कृपा से तत्वदर्शी सन्त मिल गये और उसने सन्त से निष्काम कर्म का ज्ञान प्राप्त कर लिया तो वह साधन भजन करके ज्ञान अग्नि प्रकट कर सकता है और उसमें कर्म संस्कारों के बीज को जलाकर उन्हें निष्क्रिय कर सकता है जब कर्म संस्कार जल कर राख हो जाते हैं तो फिर वे उसी प्रकार उदय नहीं हो पाते हैं जैसे किसी बीज को भून देने पर उसमें अंकुरित होने की क्षमता नहीं रहती है, चाहे उसे पृथ्वी का उचित वातावरण भी मिल जाये। इस प्रकार निष्काम हो जाने पर जीव बन्धन मुक्त हो जाता है फिर उसका आवागमन समाप्त हो जाता है। निष्काम ज्ञान के साधन से सकाम कर्मों पर ब्रेक लग जाता है। साधना से सकामी मन निष्कामी हो जाता है। मन के निष्कामी होने पर जीव उसी प्रकार बन्धन से छूट जाता है जैसे चुम्बक के द्वारा पकड़ा गया लोहा पारस के संसर्ग से सोना बनते ही चुम्बक से छूट जाता है। सूर्य की प्रचण्ड अग्नि भी कर्म संस्कारों को जलाने में समर्थ नहीं होती है। इन संस्कारों को जलाने में केवल ज्ञान अग्नि ही समर्थ हो सकती है। जब सकाम कर्मों के संस्कार ज्ञान अग्नि से भस्म कर दिये जाते हैं। तो निष्काम कर्म के दिव्य संस्कार से जीव परमात्मा के दिव्य लोक को प्राप्त कर परमानन्द का अनुभव कर लेता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है।

साधना में सफलता संत के वचनों पर दृढ़ विश्वास करने पर ही मिल सकती है।

साधना का मार्ग अपनाने से पहले सच्चे सन्त का सत्संग सुनना अति आवश्यक है क्योंकि सत्संग मानव का कल्याण करने वाला होता है और मन में उठने वाले सभी संशयों का निवारण करता है। जिज्ञासु को सन्त के वचनों पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए। दृढ़ विश्वास से ही जिज्ञासु के अन्दर सेवा भाव प्रकट होते हैं। सेवा भाव प्रकट होने पर ही सन्त जिज्ञासा को साधना की विधियों को सिखाते हैं। जिससे सेवकों का सौभाग्य बनता है। साधना का मार्ग वास्तव में शूरवीरों का मार्ग है, कायरों का नहीं। इस पर चलना सामान्य व्यक्ति के वश की बात नहीं है। इसीलिए कहा गया है कि–

कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति वर्ण कुल खोय।।

साधना के पथ पर जाति वर्ण एवं कुल का अभिमान त्याग कर ही आगे बढ़ा जा सकता है। साधना के द्वारा व्यक्ति अपने कुसंस्कारों एवं प्रारब्ध को काटने के लिए संघर्ष करता है। साधना नीचे की ओर से ऊपर उठने का एक अभियान है। इस अभियान में वही व्यक्ति सफल हो सकता है जो सन्त के वचनों पर दृढ़ विश्वास करके आगे बढ़ता है जो सन्त के वचनों पर विश्वास नहीं करता है उसे सपने में भी सुख एवं साधना में सफलता नहीं मिल सकती है इसलिए कहा गया है कि–

सन्त के वचन प्रतीति न जेहि।
सपनेहुं सुगम न सुख सिधि तेहि।।

साधना का मार्ग जीवात्मा का परमात्मा की ओर बढ़ने का मार्ग है इस मार्ग पर मजबूती से आगे बढ़ने के लिए साहस, अटूट विश्वास, दृढ़ संकल्प एवं आत्मबल की आवश्यकता होती है साधना के द्वारा अपने दुर्गुणों एवं चित्त के विकारों को नष्ट करने का प्रयास किया जाता है। साधना से अपने अन्दर एक विशेष प्रकार की हलचल पैदा होती है। इसे बाहुबल से नहीं बल्कि संयम एवं आत्म बल से ही दबाया जा सकता है। इसलिए साधना का मार्ग कायरों का नहीं बल्कि शूरवीरों का मार्ग है क्योंकि चित्त में जब कामना एवं वासना हिलोरे लेती है तो कई वर्षों तक की गयी साधना भी खण्डित

होते देर नहीं लगती है जब चित्त में लोभ की आँधी आती है तब साधना पल भर में उड़ जाती है इसलिए साधक में संयम होना बहुत जरूरी है साधना में साधक की अग्नि परीक्षा होती है इस परीक्षा में वही साधक पास हो सकता है जिसमें अद्भूत साहस, परमात्मा में अटल विश्वास, एवं दृढ़ संकल्प होता है। कोई विरला शूरवीर साधक ही अपनी साधना के पथ पर दृढ़ता से आगे बढ़ता है। साधक साधना के द्वारा अपने अन्दर सोयी हुई शक्तियों को जागृत करता है वे शक्तियाँ ही साधक की साधना को सफल बनाने में सहायक हो जाती हैं। साधक भी उन शक्तियों का सदुपयोग अपने जीवन में कर लेता है। इसलिए साधना करते हुए हमें भी सच्चा साधक बनना है तो हमें अपने आराध्य परमात्मा तथा साधना पथ पर आगे बढ़ाने वाले पूर्ण सन्त में अटूट विश्वास एवं निश्छल भक्ति और दृढ़ संकल्प के साथ साधना पथ पर तब तक आगे बढ़ते रहना चाहिए जब तक कि हम अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त न कर लें। यह तभी सम्भव है जब हम सच्चा सेवक बनकर सन्त की आज्ञा एवं अनुशासन में रहकर साधन करें तभी हम सच्चे सन्त के प्रिय सेवक कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं क्योंकि शास्त्रों में भी कहा गया है कि–

सोई सेवक प्रियतम मम सोई।
मम अनुशासन माने जोई।।

भजन

बड़े हितैषी सन्त जगत में, जिन साधन योग सिखाया।
मोह माया में फंसे जीवों को, शब्द का बोध कराया।।
शब्द में सुरति जोड़कर, सुमरन का सार बताया।
सेवक के जीवन के अन्दर, अनहद नाद सुनाया।।
विषयों का विष उतार दिया, अब ज्ञान का रंग चढ़ाया।
सुमरन साधन व सेवा से, ज्ञान वैराग्य जगाया।।
गुरू ज्ञान की महिमा को, सेवकों को समझाया।
गुरू आज्ञा का पालन करके, जीवन सफल बनाया।।
गुरू अविनाशी सबके बन्दर, ध्यान में दर्श कराया।
चेतन योगी गुरू सेवा से, सेवको का सौभाग्य बनाया।।

शिक्षा के द्वारा भौतिक ज्ञान एवं विद्या के द्वारा अध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होती है।

इस संसार में प्राचीन काल से ही जीवन को प्रभावित करने वाली ज्ञान की दो धाराएँ निरन्तर बहती रही हैं इनमें एक धारा भौतिक वादी अर्थात् भोगवादी धारा है जिसे शिक्षा कहते हैं जो हमारी आजीविका चलाने के काम आती है इसके द्वारा हम संसार के लोकाचार एवं संसार में होने वाले घटनाओं की जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। आज जो व्यक्ति संसार की ज्यादा जानकारियाँ रखता है उसे ही संसार में ज्यादा होशियार समझा जाता है इस शिक्षा के द्वारा भौतिक लोक का ही ज्ञान प्राप्त किया जाता है इस भौतिकवादी धारा का आधार काम और अर्थ रहा है। दूसरी धारा अध्यात्मिक धारा अर्थात् आदर्शवादी धारा है जिसे विद्या कहा जाता है जिसने इस विद्या को जान लिया उसने मान लो अमृत प्राप्त कर लिया इसके द्वारा ही मानव का विवेक जाग्रत होता है इस विद्या के द्वारा जीवन में आने वाली सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है इस विद्या से आन्तरिक जगत् अर्थात् अध्यात्मिक जगत का ज्ञान होता है इसके द्वारा साधक अपने अन्दर प्रवेश करता है इसके द्वारा ही सत्य–असत्य का निर्णय किया जा सकता है। इस अध्यात्मिक धारा का आधार धर्म एवं मोक्ष है। वास्तव में हम धर्म के अर्थ को भी सही रूप से समझ नहीं पाते हैं। हम धर्म का अर्थ किसी मत एवं सम्प्रदाय से लगा लेते हैं जो उचित नहीं है। धर्म तो वह सत्य है जिसे धारण करने पर जीवन का परम कल्याण होता है। यह जीवन को अनुशासित एवं संयमित करता है। धर्म काम एवं अर्थ को भी नियन्त्रित एवं संयमित करता है। धर्म तो काम का भी मर्यादापूर्वक आचरण करने की सलाह देता है जो व्यक्ति काम का अमर्यादित आचरण करता है उसका काम भोग वासना बन जाता है। अमर्यादित काम वासना वाले व्यक्ति का जीवन पशु के समान हो जाता है। वह दुराचार करने लगता है, ऐसे व्यक्ति को नरपिशाच की संज्ञा दी जाने लगती है धर्म से हमें यह ज्ञान होता है कि भोगों को त्यागपूर्ण भाव से ही भोगना चाहिए। धर्म से हीन काम भी विष की तरह ही घातक होता है। अर्थ अर्थात् धन भी जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है यह भौतिक जीवन का आधार है। भौतिक जीवन चलाने के लिए उसकी सभी को आवश्यकता होती है। साधु सन्तों को भी जीविकोपार्जन एवं आश्रमों को चलाने के लिए इसकी आवश्यकता होती है परन्तु सन्तो द्वारा इसको धर्म के आधार पर कमाने की सलाह दी जाती है यदि मानव धर्म को छोड़कर लोभ के कारण अनावश्यक धन संग्रह करता है तो वह जीवन को बर्बादी की ओर ले जाता है वास्तव में धर्म के आधार पर ईमानदारी एवं परिश्रम से कमाया गया धन ही जीवन में फलित होता है मानव में लोभ की प्रवृति बढ़ जाने के कारण ही समाज में भ्रष्टाचार निरन्तर फैल रहा है। दूसरों का शोषण करके बेईमानी से कमाया गया धन स्वयं, परिवार व आने वाली पीढ़ियों को भी बर्बाद कर

देता है। धर्म हमें दो हाथों से कमाने एवं हजार हाथों से धर्म की सेवा करने की सलाह देता है। इस प्रकार से बाहरी जगत में काम और अर्थ प्रगति के साधन समझे जाते हैं। जब कि आध्यात्मिक जगत में धर्म एवं मोक्ष ही जीवन की प्रगति के मूल स्तम्भ हैं। धर्म भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन दोनों का मूल स्तम्भ है जिसे अपनाकर भौतिक जीवन भी समृद्ध हो सकता है तथा आन्तरिक जीवन में जन्म–जन्मान्तरों के भव बन्धनों को काटकर जीवन को परम लक्ष्य मोक्ष की ओर ले जाया जा सकता है। मोक्ष ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। मोक्ष विषय में भी हमें यह समझ लेना चाहिए कि मोक्ष कोई ऐसी अवस्था नहीं है जो मरने के बाद ही सम्भव हो। मोक्ष के लिए व्यक्ति को मरने के बाद का इन्तजार नहीं करना पड़ता बल्कि अध्यात्म विद्या की साधना के द्वारा जीते जी में ही वह परमानन्द की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। मोक्ष सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त होने की अवस्था है, इसे प्राप्त करने के बाद व्यक्ति को जीवन में कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है। वह अपने दिव्य स्वरूप में स्थापित हो जाता है मोक्ष से उसका जीवन धन्य हो जाता है और उसका इस पृथ्वी पर मनुष्य योनि में आने का उद्देश्य पूर्ण हो जाता है। आज के युग में जीते जी मोक्ष प्राप्त करने वाले तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी धर्म पर आधारित उस तत्व ज्ञान का जिज्ञासुओं को प्रत्यक्ष बोध करा रहे हैं। जिज्ञासु व्यक्ति "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11, दिल्ली–110085 में रविवार के दिन 2 बजे से 5 बजे तक सत्संग श्रवण कर अपनी जिज्ञासा को शान्त करें तथा मानव जीवन को सफल बनायें।

भजन

लाख बनाले अरे जमाने, कितने धर्म बनायेगा।
कलिकाल में चेतन ज्ञान का, झण्डा ही लहरायेगा।।
बिना ज्ञान के धर्म–अधर्म को, कभी समझ नहीं पायेगा।
सत्यधर्म को वही नर जाने, जो सन्तशरण में आयेगा।।
मानव चोला साधन का है, फेर हाथ नहीं आयेगा।
सन्त वचन को टाल दिया तो सिर धुन–धुन पछतायेगा।।
निष्काम कर्म का साधन करले, तू समदर्शी बन जायेगा।
जीवन दाता भाग्य विधाता, जीवन में ही मिल जायेगा।।
धर्म के मर्म को आज के युग में, चेतन सन्त बतायेगा।
सत्य ज्ञान का साधन करके, मोक्ष गति को पायेगा।।

मानव जीवन में आन्तरिक साधना से ही सच्ची शान्ति स्थापित हो सकती है।

यह मानव जीवन परमात्मा द्वारा दिया गया सर्वोत्तम उपहार है परन्तु इस मानव जीवन को प्राप्त करने पर भी अधिकांश मानव निराश हताश एवं अशान्त दिखायी देते हैं इसका कारण यह है कि मानव बाहरी साधनों से जीवन में शान्ति स्थापित करना चाहता है जब कि शान्ति का स्रोत उसके अन्दर ही छिपा है जिससे वह अनभिज्ञ है। जैसे सूखी नदी में जल ऊपर दिखायी नहीं देता है परन्तु उसके नीचे जल छिपा रहता है यदि उसे थोड़ा सा खोदकर देखा जाय तो पानी निकल आता है इसी प्रकार मानव जीवन में बाहरी साधन करने से आन्तरिक शान्ति नहीं मिल सकती है यदि जीवन में आन्तरिक साधना की जाये तो शान्ति का स्रोत दिखायी दे सकता है इस आन्तरिक साधना का प्रयोगात्मक बोध तत्वदर्शी सन्त कराते हैं जिससे मानव का अन्धकारमय जीवन प्रकाशमय हो जाता है वे मानव के अशान्त जीवन का तार सत्य–ब्रह्म से जोड़ देते हैं जिससे उसके जीवन में उसी प्रकार उजाला हो जाता है जैसे कमरे में लगे बल्ब का कनैक्शन बिजली से जोड़ दिया जाता है तो बल्ब में रोशनी आ जाती है और सारा कमरा प्रकाश से भर जाता है। मानव के अन्दर भरी सभी भ्रान्तियों का कारण अज्ञान है इस अज्ञान के पर्दे को सन्त ज्ञान से हटा देते हैं। जैसे सूर्य को ढ़कने वाले बादल को सूर्य स्वयं नहीं हटा सकता है बल्कि उसे हवा हटा सकती है वैसे ही अज्ञान अन्धकार से ढ़के आत्म स्वरूप को तत्वदर्शी सन्त मानव की ज्ञान दृष्टि खोल कर दिखा सकते हैं। इसलिए सच्चे सन्त समाज के सच्चे मार्ग दर्शक एवं परममित्र होते हैं। संसारी मित्र संसार सम्बन्धी सहायता तो कर सकते हैं परन्तु अध्यात्म सम्बन्धी सहायता सन्तरूपी परममित्र ही कर सकते हैं। वे मानव के अन्दर निराकार परमात्मा को साकार कर देते हैं। कुछ लोगो की मान्यता है कि परमात्मा सत्य तो है परन्तु वह साकार नहीं हो सकता है। इस विषय को इस प्रकार समझा जा सकता है जैसे बीज में पेड़ निराकार रूप में रहता है परन्तु उचित वातावरण मिलने पर उस बीज में से पौधा अंकुरित हो जाता है उसी प्रकार आन्तरिक साधना करने से निराकार परमात्मा साकार हो जाता है जैसे यदि बीज में से पौधा अंकुरित नहीं होता है तो उसका कोई विशेष लाभ नहीं होता है अर्थात् उस पर न तो कोई मधुर फल लग सकता है और न ही कोई अन्य बीज बन सकता है उसी प्रकार निराकार परमात्मा जब तक साकार नहीं होगा तब तक उसका कोई विशेष लाभ नहीं होगा। लोग साकार शब्द का अर्थ शरीर सम्बन्धी आकार से लगाते हैं परन्तु हमारे अन्दर प्रकट प्रकाश ही उसका साकार रूप है जब मानव आन्तरिक साधना से अपने अन्दर उस परम प्रकाश का दर्शन कर लेता है तब उसकी सारी भ्रान्तियाँ समाप्त हो जाती हैं शास्त्रों को पढ़ने से संशय

एवं भ्रान्तियाँ समाप्त नहीं होतीं चाहे उसने वेद उपनिषदों का अध्ययन क्यों न कर लिया हो। शास्त्रों को पढ़ने पर भी लोग प्रतीक पूजा ही कर रहे हैं इससे स्पष्ट है कि उन्हें ज्ञान हुआ ही नहीं है। परमात्मा हमारे अन्दर है उसका ज्ञान भी अन्दर ही होता है। जो आन्तरिक ज्ञान का साधन करने वाले तथा उसका बोध कराने वाले सन्त की शरण जाकर सत्य ज्ञान का साधन करता है वही सच्ची शान्ति का स्रोत अपने अन्दर पा लेता है। इसीलिए कहा गया है कि–

जिन ढूँढा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ।।

जिन्होंने गहरे समुद्र में डुबकी लगाई उन्हें ही मोती प्राप्त हुए हैं जो डूबने के डर से किनारे पर ही बैठे रहते हैं उन्हें मोती नहीं मिल सकते हैं। अतः शान्ति का स्रोत अन्दर ही खोजने का प्रयास करना चाहिए।

भजन

गुरूवर तुम्हारी कृपा से हम अधम संभल गये।
हम फंसे थे अज्ञान अन्धेरे में, अब उजाले में आ गये।।
हम सोये थे मोह नींद में, अचानक ज्ञान से जग गये।
तुमने जगाया हम सबको, हमारे सौभाग्य बन गये।।
सत्संग गंगा में नहाकर, बगुले हंस बन गये।
दुर्जन भी अमृत ज्ञान से, सज्जन बन गये।।
चेतन सन्त का सत्संग सुनकर, सब संशय मिट गये।
गुरू ज्ञान के साधन से, परमानन्द को पा गये।।

परमात्मा की सरकार का बोध कराने वाले सन्त आज भी उपलब्ध है

हम अपने जीवन में दो सरकारों द्वारा किये जा रहे कार्यों को निश–दिन देख रहे हैं इन सरकारों में एक भौतिक सरकार है दूसरी सरकार परमात्मा की सरकार होती है। भौतिक सरकार को तो हम अपने वोट के अधिकार से चुनते हैं। इस सरकार की प्रशंसा अधिकांश लोग करते रहते हैं और इस सरकार द्वारा भौतिक जीवन में किये गये कार्यों को ही महत्व देते हैं। परन्तु इस सरकार को न तो अपने वास्तविक लक्ष्य की जानकारी होती है और न ही अपनी प्रजा के लक्ष्य का उन्हें पता लगता है यह भौतिक सरकार शरीर सम्बन्धी कार्य ही करती है इन कार्यों को हम रोज देखते रहते हैं। इसके अतिरिक्त दूसरी सरकार परमात्मा की सरकार होती है जो इन बाहरी आँखों से दिखायी नहीं देती है यह अलौकिक सरकार होती है जो परमात्मा की मर्यादा के अनुसार चलती है। मानव की पहुँच इस अलौकिक सरकार तक भी होनी चाहिए। इस सरकार द्वारा आत्मा की उन्नति के कार्य किये जाते हैं। भौतिक ज्ञान वाले मानवों को इस परमात्मा की सरकार के कार्य अनुभव में नहीं आते हैं। परन्तु अध्यात्म ज्ञान का साधन करने वाले साधकों को परमात्मा की सरकार का भी ज्ञान होता है और परमात्मा की सरकार के कार्य भी उनके अनुभव में आ जाते हैं। परमात्मा की सरकार द्वारा आत्मिक विकास किया जाता है। यह मन बुद्धि व चित्त के संस्कारों को मिटाने में समर्थ है। जब परमात्मा की सरकार किसी तत्वदर्शी महात्मा के माध्यम से जीव की ज्ञान दृष्टि खोल देती है तो जीव को अपने जीवन की पहचान हो जाती है फिर वह जीवन में योग साधन करके योग शक्ति के बल को प्राप्त कर लेता है इस योग शक्ति से उसके अन्दर इतना उजाला हो जाता है जैसे रात में दिन हो गया हो। इस उजाले में वह लोक लोकान्तरों को देखने में समर्थ हो जाता है। हम इस दुनिया में सकाम जीवन जीते हैं परन्तु जब परमात्मा का ज्ञान हो जाता है तो हम निष्काम जीवन जीते हैं जीवन निष्काम होने पर हम परमात्मा की सरकार की पूरी तारीफ कर सकते हैं। परमात्मा के ज्ञान का साधन करने पर जीवन निष्पाप बन जाता है। परमात्मा की प्राप्ती मानव कैसे कर सकता है इसका भेद सन्त ही खोल सकते हैं। वे ज्ञान दृष्टि देकर अपने भीतर देखने की साधना बता कर मानव जीवन को सफल बनाते हैं जब साधना से जीवन निष्पाप बन जाता है तो मोक्ष प्राप्त होने में देर नहीं लगती है। परमात्मा की सरकार का बोध कराने वाले मुक्त आत्मा तत्वदर्शी महात्मा आज चेतन योग मोक्ष धाम में उपलब्ध हैं। उनसे ज्ञान प्राप्त कर जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा तीन दिवसीय अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन दिनांक 27–9–2019 से 29–9–2019 तक "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11, दिल्ली में संस्था के संस्थापक तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया। इसमें दिल्ली, यू॰पी॰, हरियाणा आदि प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से साधक एवं साधिकाएँ सम्मिलित हुए। जिन्हें महात्मा जी ने दो परियों में 4 घण्टे प्रतिदिन साधना का अभ्यास कराया। उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए प्रेमियों को समझाया कि जीव को मनुष्य जन्म परमात्मा का विशेष उपहार है। इसमें ज्ञान प्राप्त कर साधना के माध्यम से सकाम कर्म संस्कारों को ज्ञान अग्नि में जलाकर नष्ट किया जा सकता है जिससे जीव आवागमन के चक्र से बचकर मुक्त हो सकता है यही मनुष्य जन्म का उद्देश्य है। सकाम कर्मों के संस्कार ही जीव को बन्धन में बाँधे रखते हैं। बन्धन मुक्त होने के लिए निष्काम ज्ञान की आवश्यकता होती है। महात्मा जी ने अपने अनुभव के भजन भी सुनाये। प्रेमियो ने भी अपने विचार एवं अनुभव प्रकट किये। महिला प्रेमियों ने गुरू महिमा के भजन सुनाकर वातावरण को आनन्दमय बनाया। सभी प्रेमियों ने शिविर के आयोजन के लिए महात्मा जी का आभार प्रकट किया। शिविर को सफल बनाने के लिए प्रेमी निर्मलसिंह, पवन कुमार, रामगोपाल, सत्यपाल व यशपाल सिंह जी ने सेवा कार्य किया। हर्षोल्लास के साथ दिनांक 30.09.2019 को प्रातः साधना एवं प्रसाद वितरण के बाद शिविर समापन हुआ।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के प्रवचन सभी संशयों की ग्रन्थियाँ खोलने वाले हैं। इन प्रवचनों में समस्त अध्यात्म का सार निहित है।

– प्रमोद त्यागी खाई खेड़ी (मु॰ नगर)

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका का अध्ययन करने से मानव वास्तविक जीवन जीने की कला को जान सकता है क्योंकि अधिकांश मानव पशुओं से भी बदतर जीवन जी रहे हैं।

– कृष्णावीर कल्याणपुर (मेरठ)

3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका आज के युग के मानव को आत्मज्ञान की ओर प्रेरित करने की एक मात्र कुंजी है क्योंकि आत्मज्ञान ही जीवन की सफलता का मूल मंत्र है।

– रामभूल शर्मा शाहदरा (दिल्ली)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका के द्वारा हमें अध्यात्म शिविरों की सूचना, अध्यात्म सत्संग एवं भजन घर बैठे ही आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं इसमें महात्मा जी का अथक एवं अभूतपूर्व प्रयास है।

– रामादेवी वियजविहार, दिल्ली–85

आवश्यक सूचना

संस्था के समस्त प्रेमियों को सूचित किया जाता है कि संस्था द्वारा आगामी शिविर उखलीना केन्द्र की ओर से दिनांक 01.11.2019 से 03.11.2019 तक संस्था के प्रधान कार्यालय (चेतन योग मोक्षधाम) रोहिणी, सैक्टर-11 में लगाया जायेगा। सभी प्रेमी अधिक से अधिक संख्या में शिविर में भाग लें।

आज्ञा से
तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी

G-3/DL(N)/202/2019-21

अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा तीन दिवसीय अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन दिनांक 27–9–2019 से 29–9–2019 तक "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11, दिल्ली में संस्था के संस्थापक तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया। इसमें दिल्ली, यू॰पी॰, हरियाणा आदि प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से साधक एवं साधिकाएँ सम्मिलित हुए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं महात्मा परम चेतनानन्द, चेतन योग आश्रम, सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी
मुद्रक : टैन प्रिन्ट्स इन्डिया प्रा. लि., रोहद, हरियाण